Roll No.
रोल नं.

Series SHC

Code No. **कोड नं.** **29/1**

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 5 हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 15 प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

हिन्दी (वैकल्पिक)
HINDI (Elective)

निर्धारित समय : 3 घण्टे — *अधिकतम अंक : 100*

Time allowed : 3 hours — *Maximum Marks: 100*

1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए और भाषा-शैली पर टिप्पणी भी लिखिए : 20

खेल और सेंध में माहिर दिल्ली लीक से हटकर चलने को प्रश्रय नहीं देती। कला और साहित्य में भी नहीं। गुज़रे ज़माने में भले देती रही हो। आख़िर मिर्ज़ा ग़ालिब जैसा, पटरी से उतरा शायर, यहाँ का बाशिंदा था। और 'माना कि रहें दिल्ली में पर खाएँगे क्या', पूछने के बावजूद इसकी गलियाँ छोड़ कहीं गया न था। हो सकता है, मिर्ज़ा समझ गए हों कि पटरी से उतरने का मज़ा तब है जब ज़्यादातर लोग पटरी पर लदे रहें और आपके लिए भटकने को रास्ते खुले पड़े हों। एक बार भीड़ पटरी से उतर कर, आपकी राह आ लगे तो समझिए, वही पटरी बन गई और आप उसमें हिल-मिलकर, गए काम से।

अथवा

बहुत दूर तक और बहुत काल से पीड़ा पहुँचाते चले जाते हुए किसी घोर अत्याचारी का बना रहना ही लोक की क्षमा की सीमा है। इनके आगे क्षमा न दिखाई देगी — नैराश्य, कायरता और शिथिलता ही छाई दिखाई पड़ेगी। ऐसी गहरी उदासी की छाया के बीच आशा, उत्साह और तत्परता की प्रभा जिस क्रोधाग्नि के साथ फूटती दिखाई पड़ेगी, उसके सौंदर्य का अनुभव सारा लोक करेगा। राम का कालाग्नि-सदृश क्रोध ऐसा ही है। यह सात्त्विक तेज है, तामस ताप नहीं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं ***तीन*** के उत्तर लिखिए : 4+4+4=12

(क) 'व्यक्ति की एक झलक' निबन्ध में लेखक ने प्रसाद के व्यक्तित्व के बाह्य और भीतरी स्वरूप की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है ?

(ख) सत्य और शिव के प्रति भीष्म और कृष्ण के दृष्टिकोण में क्या अंतर था ? — 'भीष्म को क्षमा नहीं किया गया !' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

(ग) 'मिशनरी' भाव की निंदा और ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निंदा में क्या अन्तर है ? — 'निंदा-रस' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'मेरी जीवनयात्रा : दो चित्र' पाठ में लेखक ने आर्थिक स्थिति के कारण अपनी किन-किन समस्याओं का उल्लेख किया है ?

3. 'अथातो घुमक्कड़-जिज्ञासा' निबन्ध के लेखक युवाओं को घुमक्कड़-धर्म ग्रहण करने का परामर्श क्यों देते हैं ? 3

अथवा

'मंत्र' कहानी के बूढ़े भगत का डॉ. चड्ढ़ा के प्रति व्यवहार आदर्श क्यों है ? युक्तियुक्त विवेचन कीजिए।

4. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए और काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए : 10

जा दिन ते छबि सों मुसुकान कहूँ, निरखे नंदलाल बिलासी।
ता दिन तें मन-ही-मन में, मतिराम पियै मुसकानि सुधा-सी।
नेकु निमेष न लागत नैन, चके चितवै तिय देव-तिया-सी।
चंद-मुखी न चलै, न हिलै, निरबात निवास में दीप-सिखा-सी।।

अथवा

जब पल भर का है मिलना,
फिर चिर वियोग में झिलना,
एक ही प्रात है खिलना,
फिर सूख धूल में मिलना,
तब क्यों चटकीला सुमन रंग ?

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं ***तीन*** के उत्तर लिखिए : 3+3+3=9

(क) 'दिनकर' ने 'तू तो है वह लोक जहाँ उन्मुक्त मनुज का मन है' — किसे कहा है और क्यों ?

(ख) 'ओ मेरे मन' कविता मे जीवन के प्रति कवि के क्षोभ का क्या कारण है, उसे आप कहाँ तक उचित समझते हैं ?

(ग) पुरवा सिहकी, फिर दीख गए
शिशु घन-कुरंग
शशि से शरमाना सीख गए
शिशु घन-कुरंग
उपर्युक्त पंक्तियों का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'एक छोटी-सी लड़ाई' कविता में कवि समाज के किस वर्ग के हित में संघर्ष करना चाहता है और क्यों ?

6. जायसी **अथवा** शमशेर बहादुर सिंह के जीवन और रचनाओं का परिचय देते हुए उसके काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिए। 6

7. 'रंगभूमि' उपन्यास के कथानक की चार प्रमुख विशेषताओं पर प्रकश डालिए। 5

अथवा

'रंगभूमि' एक समस्यामूलक उपन्यास है जिसमें औद्योगीकरण की समस्या विशेष रूप से उठाई गई है।'' — इस कथन के आलोक में रंगभूमि के कथानक की समीक्षा कीजिए।

8. ''सोफिया प्रगतिशील विचारों वाली, उदारहृदया तथा आदर्श प्रेमिका है।'' — इस कथन के आलोक में सोफिया का चरित्रांकन कीजिए। 5

अथवा

''सूरदास को कोई कहता था सिद्ध था; कोई कहता था बली था; कोई देवता कहता था; पर वह यथार्थ में खिलाड़ी था।'' इस कथन की पुष्टि में सूरदास का चरित्रांकन कीजिए।

9. ''प्रेमचंद भाषा के जादूगर थे।'' — इस दृष्टि से रंगभूमि की भाषा की समीक्षा कीजिए। 5

अथवा

'' 'रंगभूमि' का उद्देश्य जनता की कर्तव्य-चेतना को जगाना है।'' आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं ? युक्तियुक्त विवेचन कीजिए।

10. रामभक्ति काव्यधारा और कृष्णभक्ति काव्यधारा में मूल अन्तर बताते हुए रामभक्ति काव्यधारा के काव्य की किन्हीं तीन प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 4

अथवा

भारतेन्दुयुगीन काव्य की तीन सामान्य विशेषताओं का उल्लेख करते हुए इस काव्यधारा के दो प्रसिद्ध कवियों के नाम भी लिखिए।

11. प्रगतिवादी काव्यधारा **अथवा** नई कविता की चार प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए उस काव्यधारा के दो प्रसिद्ध कवियों का नामोल्लेख कीजिए। 6

12. प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक ***अथवा*** प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास के क्रमिक विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 4

13. निम्नलिखित विषयों में से किसी ***एक*** विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए : 12

(क) भारतीय संस्कृति का बदलता स्वरूप

(ख) क्या नहीं कर सकती नारी

(ग) महानगरीय जीवन : समस्याएँ और समाधान

(घ) चरित्र-निर्माण में शिक्षा की भूमिका

(ङ) परिवर्तन : प्रकृति की एक शाश्वत प्रक्रिया

14. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है,
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है,
नदियाँ प्रेम-प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं,
बंदीजन खगवृन्द, शेषफन सिंहासन है।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि, तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।
निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है,
शीतल मन्द सुगन्ध पवन हर लेता श्रम है,
षड्ऋतुओं का विविध दृश्ययुत अद्भुत क्रम है,
हरियाली का फ़र्श नहीं मखमल से कम है,
शुचि सुधा सींचता रात में, तुझ पर चन्द्र प्रकाश है।
हे मातृभूमि, दिन में तरणि, करता तम का नाश है।

(क) ''नीलाम्बर परिधान .... सिंहासन है'' काव्य-पंक्तियों में चित्रित मातृभूमि के वेष का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। 2

(ख) मातृभूमि के जल और वायु की क्या विशेषताएँ हैं ? 1

(ग) सूर्य और चन्द्रमा मातृभूमि की सेवा किस प्रकार करते हैं ? 1

(घ) बादलों के द्वारा 'अभिषेक' किए जाने का क्या आशय है ? 1

15. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

जब तक किसी पदार्थ का संस्कार नहीं होता, तब तक वह सदोष औश्र गुणहीन रहता है। उदाहरणार्थ, जब तक हीरे को सान पर संस्कृत नहीं दिया जाता, तब तक उस पर से न तो मिट्टी का आवरण ही हटता है और न उसमें चमक ही आती है। इसी प्रकार जब सोना खान से निकलता है तब वह मलिन रहता है। संस्कार के बग़ैर सुवर्ण नहीं बन पाता। जब जड़ वस्तुओं में भी संस्कार से ही विलक्षणता आती है, तब मनुष्य का तो कहना ही क्या ? मनुष्य का भी स्वरूप संस्कार से ही यथार्थतः प्रकाशित होता है।

संस्कार वह स्नेहयुक्त दीपक है जो मानव को अंधकार से निकालकर, असभ्यता के पंक से खींचकर संतों की श्रेणी में ला बिठाता है। उसके जीवन को दिव्यता प्रदान करता है। अच्छे संस्कार मनुष्य के मन, वचन और कर्म तीनों को पवित्रता प्रदान करते हैं। हमारे चरित्र को उज्ज्वल बनाते हैं। उज्ज्वल चरित्र से न केवल हमारा लाभ होगा, अपितु समाज, राष्ट्र और विश्व का भी अभ्युदय होगा।

(क) किसी पदार्थ का संस्कार करने से क्या तात्पर्य है ? 1

(ख) संस्कार मानव के चरित्र को उज्जवल कैसे करते हैं ? 1

(ग) सुसंस्कारी बनने के लिए हमें किस प्रकार के लोगों के बीच उठना-बैठना चाहिए ? 1

(घ) सुसंस्कारों से समाज और राष्ट्र का अभ्युदय कैसे होगा ? 1

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1